वनान्तरादुपावृत्तैः समित्कुशफलाहरैः ।

पूर्यमाणमदृश्याग्निप्रत्युद्यातैस्तपस्विभिः ।।49।।

अन्वय वनान्तरात् उपावृत्तैः समित्कुशफलाहरैः अदृश्याग्निप्रत्युद्यातैः तपस्विभिः पूर्यमाणम् (आश्रमम्)।

अनुवाद वनान्तरों (दूसरे वनों) से लौटते हुए, समिधाएँ, कुशा और फल एकत्रित करके लिए हुए, तथा अदृश्य (अप्रज्ज्वलित) अग्नियों द्वारा स्वागत किए जाते हुए तपस्वियों से धीरे-धीरे परिपूर्ण होते हुए वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में राजा और रानी पहुँचे।

टिप्पणियां

विशेष इस श्लोक 49 से लेकर 53 श्लोक तक वशिष्ठ के आश्रम का वर्णन है। राजा सन्ध्या के समय आश्रम में पहुँचे थे, अतः इन श्लोकों में सायंकाल के समय आश्रम के दृश्य का वर्णन है।

समित् तपस्वी जन यज्ञ के लिए समिधाएँ (लकड़ियों)- पवित्र कुशा, घास तथा फल एकत्रित करने के लिए पास के वनों में गए थे। वे अब यज्ञ की सामग्री एकत्रित करके सायंकाल हो जाने पर आश्रम में लौट रहे थे। समिधश्च कुशाश्च फलानि च इति समिधकुशफलानि (द्वन्द्व समास) तानि आहर्तुं शीलं येषां ते समित्कुशफलाहराः (उपपद समास), तैः। दिलीप ने तपस्वियों को आश्रम में लौटते देखा, जो समिधाएँ आदि एकत्रित करके ला रहे थे।

वनान्तरात् अन्यत् वन वनान्तरं (मयूरव्यंसकादिवत् समास), तस्मात् वनान्तरात्, उपावृत्तैः (उप आ वृत् क्त, तृतीया विभक्ति बहुवचन)। दूसरे जंगलों से लौटे हुए, 'तपस्विभिः' का विशेषण।

पूर्यमाणम् पूर् कर्मणि शानच् अथवा पॄ कर्मणि (कर्मवाच्य में) शानच्, तपस्वियों द्वारा भरा जाता हुआ, 'आश्रम' का विशेषण।

अदृश्याः द्रष्टुं योग्यं दृश्यम्, न दृश्यम् अदृश्यम् (नञ् तत्पुरुष), अदृश्याश्च ते अग्नयश्च इति, अदृश्याग्नयः (कर्मधारय समास), अदृश्याग्निभिः प्रत्युद्यातः (प्रति उद् या क्त), तैः। जिस प्रकार बच्चे प्रवास से लौटे पिताओं का स्वागत करते हैं और प्रसन्न होते हैं, उसी प्रकार यज्ञ की पवित्र अग्नियाँ भी अदृश्य रूप में तपस्वियों का स्वागत करती हैं, जब वे सायंकाल के समय समिधाएँ आदि लेकर लौटते हैं। ऐसा विश्वास है कि घर लौटते हुए तपस्वी का होम की अग्नियाँ अदृश्य अवस्था में स्वागत करती हैं। इसीलिए जब तपस्वी लौट रहे थे तो अग्नियाँ उनका स्वागत कर रही थीं परन्तु उन्हें कोई देख नहीं सकता था। इस सन्दर्भ में ये वचन देखिए.

कामं पितरं प्रोषितवन्तं पुत्राः प्रत्याधावन्ति।

एवमेतमग्नयः प्रत्याधावन्ति सकलान् दारुनिवाहरन्।।